NATIONAL HEALTH MISSION
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

उत्तर प्रदेश सरकार

दिमागी या नवकी बुखार
अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

बुखार में देरी
पड़ेगी भारी

unicef
for every child

World Health Organization
India

PATH

1. एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिन्ड्रोम या दिमागी बुखार/नवकी बीमारी (एईएस) क्या है?

उत्तरः एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिन्ड्रोम या दिमागी बुखार/नवकी बीमारी (एईएस) ऐसी घातक बीमारी है, जिससे मृत्यु भी हो सकती है या इलाज के बाद ठीक होने पर भी बहुत सारे रोगियों में दिमागी या शारीरिक विकलांगता आ जाती है।

2. एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिन्ड्रोम या दिमागी बुखार/नवकी बीमारी (एईएस) कैसे होता है?

उत्तरः दिमागी बुखार/नवकी बीमारी के संक्रमण के अनेक जटिल कारक हैं जिनमें से जापानी एन्सेफलाइटिस (JE) तथा स्क्रब टाईफस मुख्य कारक हैं। दिमागी बुखार के वायरस जानवर, सुअर, तथा तालाब में रहने वाली चिड़िया (जैसे बत्तख आदि) के शरीर में पनपते हैं। जब मच्छर इन्हें काटने के बाद मनुष्य को काटते हैं तो बीमारी का संक्रमण फैलता है। स्क्रब टाईफस के कीटाणु बहुत ही छोटे होते हैं और ये चूहे, छछून्दर आदि के शरीर में पनपते हैं तथा मनुष्यों को संक्रमित करते हैं। एईएस पानी जनित वायरस तथा बैक्टीरिया से भी होता हैं। एईएस के लगभग 30 प्रतिशत कारणों का पता अभी तक नहीं चल पाया है तथा इस पर अभी भी शोध चल रहा है।

3. एईएस कहां ज्यादा होता है?

उत्तरः पूरे भारतवर्ष में जितने एईएस के मामले दर्ज हैं, उनमें से लगभग 60 प्रतिशत मामले उत्तर प्रदेश से हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों (कुशीनगर, महाराजगंज, सिद्धार्थ नगर, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, संतकबीर नगर) में यह बीमारी अधिक व्याप्त है। विगत वर्षों में देवी पाटन तथा लखनऊ मण्डल के 10 जनपदों तथा बाराबंकी जनपद से भी दिमागी बुखार के अनेक मरीज पाये गये हैं।

4. एईएस की पहचान हम कैसे कर सकते हैं?

उत्तरः एईएस के निम्न लक्षण हैः

→ तेज बुखार आना तथा लगातार बुखार बने रहना
→ सुस्त होना
→ दांत पर दांत बैठना
→ शरीर में झटके आना/दौरे पड़ना
→ पूरे शरीर में या किसी अंग में ऐंठन होना
→ बोल न पाना
→ कोमा/बेहोशी
→ चिकोटी काटने पर शरीर में हरकत न होना

5. एईएस से बचाव के क्या उपाय हैं?

उत्तरः एईएस से बचाव के निम्न उपाय हैं–

→ अपने क्षेत्र के पांच वर्ष तक के सभी बच्चों का पूर्ण टीकाकरण करायें।
→ पीने के लिये क्लोरीन से उपचारित/उबले पानी का इस्तेमाल करें अथवा इण्डिया मार्क–2 वाले हैंडपम्प के पानी को इस्तेमाल करें।

→ हैण्डपम्प के चारों तरफ पक्का चबूतरा एवं कम से कम 10 मीटर की दूरी पर पानी का निकास सुनिश्चित करें।

→ हैंड पंप के चारों तरफ पानी इकठ्ठा न होने दें तथा जल स्त्रोत के चारों तरफ सफाई के लिए समुदाय को प्रेरित करें।

→ जानवरों को अपने रहने के स्थान से थोड़ा दूर रखें और उस जगह को भी साफ–सुथरा रखें।

→ शारीरिक स्वच्छता तथा शौच के लिए शौचालय का इस्तेमाल करें, खुले में भौच ना करे।

→ जलीय पक्षी जैसे सारस, बगुला, बत्तख इत्यादि से भी दिमागी बुखार फैलता है, इसलिए इनसे दूर रहें।

→ खाना बनाने और खाने से पहले तथा मल त्याग (शौच) के बाद साबुन से हाथ धोयें।

→ अपने घर के आस–पास साफ रखे तथा पानी न जमने दें।

→ सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें और मच्छरों को पनपने से रोके।

→ सुअर बाड़ो का निर्माण घर/बस्ती से दूर करें।

→ चूहों आदि के नियंत्रण के लिए समुदाय को प्रेरित करना।

6. दस्तक अभियान क्या है?

उत्तरः एईएस को नियंत्रित करने में सबसे बड़ी समस्या इलाज में देरी है। लोग बुखार को एक आम बीमारी समझ कर घरेलू इलाज या अप्रशिक्षित डॉक्टर से संपर्क कर समय बर्बाद करते हैं। इस के कारण सही इलाज में देरी होती है और हालात बेकाबू हो जाते है। दस्तक अभियान इलाज में देरी करने के इसी समस्या को दूर करने का प्रयास कर रहा है। दस्तक ("दरवाजा खटखटाना") एईएस या दिमागी बुखार/नवकी बीमारी से बचाव व नियन्त्रण के लिए एक व्यवहार परिवर्तन संचार अभियान है। इस अभियान के जरिये यह प्रयास किया जायेगा कि हर घर में, विशेषकर जिसमें 15 साल से कम उम्र के बच्चें हैं, उस घर का दरवाजा खटखटा कर यह संदेश पहुंचाया जायेगा कि कोई भी बुखार दिमागी बुखार/नवकी बीमारी हो सकती है और जानलेवा हो सकती है, इसलिये इलाज में देरी एकदम ना करें। बुखार आते ही तुरन्त सरकारी अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र से सम्पर्क कर उचित इलाज करायें।

7. दस्तक अभियान कहां चलाया जा रहा है?

उत्तरः दस्तक अभियान उत्तर प्रदेश के उन जिलों में चलाया जा रही है जो दिमागी बुखार/नवकी बीमारी से अत्यधिक प्रभावित हैं। अभियान गोरखपुर मण्डल के 4 जनपद (गोरखपुर, देवरिया, महाराजगंज, कुशीनगर) व बस्ती मण्डल के 3 जनपद (सिद्धार्थनगर, संत कबीर नगर, बस्ती) में समस्त ब्लॉकों के गांवो में चलाया जा रहा है। इस वर्ष देवीपाटन एवं लखनऊ मण्डल तथा बाराबंकी में भी यह अभियान चलेगी।

8. दस्तक अभियान की आवश्यकता क्या है?

उत्तरः प्रदेश में दिमागी बुखार/नवकी बीमारी के संक्रमणों से होने वाले मृत्यु तथा अपंगता की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। यह स्थिति इसलिये उत्पन्न हुई है क्योंकि लोगों को यह जानकारी नहीं है कि बुखार में इलाज की देरी जानलेवा हो सकती है। 15 साल से कम उम्र का बच्चा जिसे बुखार हो उसके परिवार को तुरन्त सम्पर्क कर इलाज के लिये परामर्श देना चाहिये। यह जरूरी है कि हर बुखार की जानकारी नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र को दो दिन के अन्दर हो। ऐसी स्थिति में एक त्वरित प्रक्रिया की आवश्यकता है जिससे लोगों तक सही जानकारी पंहुचाकर दिमागी बुखार से बचाव और शीघ्र उपचार से बहुत सी जाने बचा सकें। **दस्तक** अभियान इसी जरूरत को पूरा करने के लिये कियान्वित किया जा रहा है।

दस्तक अभियान इसलिये भी आवश्यक है क्योंकि एईएस के होने का कारण मुख्य रूप से हमारे घर और आस पास की साफ सफाई से जुड़ा हुआ है। जब तक हम अपने घर और आस पास को साफ नहीं रखेंगे, इस

बीमारी में कमी नहीं आयेगी। इसलिये जरूरी है कि हम अपने घर और आस पास के क्षेत्र को साफ रखें। इस अभियान के केन्द्र में सामाजिक और पारस्परिक प्रयासों को रख कर व्यवहार परिवर्तन को अपनाने की बात को प्रमुखता दी गई है।

9. दस्तक अभियान की मुख्य संचार रणनीति क्या है?

उत्तरः दस्तक अभियान में निम्न मुख्य संचार रणनीतियां प्रयोग की जायेंगीः

→ घर घर संपर्क कर परिवार जनों को परामर्श देना।

→ वी.एच.एन.डी, विद्यालय प्रबन्धन समिति, माताओं का समूह, स्वयं सहायता समूह, स्वच्छ भारत मिशन की निगरानी समिति जैसे मंचो द्वारा सामुदायिक गतिशीलता बढ़ाना।

→ टीवी, रेडियो, मोबाइल, समाचार पत्र और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जानकारी बढ़ाना।

→ स्थानिय निजी क्लीनिक के चिकित्सकों द्वारा एईएस के लक्षण वाले मरीजों को तुरन्त निकटतम सरकारी चिकित्सालय भेजें जाने हेतु संवेदीकरण करना।

→ स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, पंचायती राज विभाग, कृषि, पशु पालन, वन, महिला एवं बाल विकास इत्यादि जैसे विभागों के साथ समन्वय बनाना जिससे कि उपलब्ध अवसर का समुचित प्रयोग किया जा सकें।

10. दस्तक अभियान में मुख्य भूमिका गांव स्तर पर किन कार्यकर्ताओं की है?

उत्तरः इस अभियान में गांव की आशा, ए.एन.एम और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता की मुख्य भूमिका है ताकि वे समुदाय के हर घर तक दिमागी बुखार/नवकी बीमारी से जुड़े संदेशों को पहंचाकर इससे जुड़े लोगों के भ्रमों और गलत धारणाओं को मिटाकर उन्हें सही तथा त्वरित निर्णय लेने में मदद दे सकें ।

11. इस अभियान में आशा की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में आशा की भूमिका निम्नप्रकार विभाजित हैः

→ **<u>एईएस के उपचार संबंधितः</u>**

- गांव में भ्रमण के दौरान बुखार के मरीजों को चिन्हित करना तथा उन्हें तुरंत नजदीकी सरकारी अस्पताल में जाकर जांच एवं इलाज कराने के लिए प्रेरित करना।
- एईएस के मरीज को एन्सेफलाइटिस उपचार केन्द्र लेकर जाना तथा उपचार केन्द्र पर पूर्व सूचना देना।
- रोगी को 108 एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध कराने में मदद करना।

→ **<u>परिवारों को सलाह संबंधितः</u>**

- गृह भ्रमण के दौरान परिवारों को एईएस के लक्षण की पहचान और बीमारी से बचाव कैसे करें।
- बुखार होने पर सरकारी अस्पताल में जांच कराना क्यों जरूरी है।

→ **<u>समुदाय में जागरूकता बढ़ाने संबंधित</u>**

- हर घर, विशेषकर जिनमें 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चे हों उनसे सम्पर्क कर मुख्य एईएस संदेशों पर चर्चा करे।

- हर गृह भ्रमण के बाद, घर में प्रमुख जगह पर एईएस स्टीकर लगायेगी।
- आंगनवाड़ी केन्द्र, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण दिवस अवसरों पर सामुदायिक बैठक, स्कूल का भ्रमण करना और शिक्षकों को बच्चों में जागरूकता बढ़ाने में मदद करना।
- स्वयं सहायता समूहों, महिला मण्डल, ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठकों में दिमागी बुखार/नवकी बीमारी की रोकथाम के लिए चर्चा करना जैसे–गांव में उपयुक्त जल निकासी, शौचालय का प्रयोग, शौच के बाद और खाना बनाने तथा खाने से पहले साबुन से हाथ धोना, जानवरों को घर से दूर रखना तथा सुअरबाड़ा गांव के बाहर बनाना आदि। समूहों को तैयार करें कि वे भी इस पर जागरूकता बढ़ायें।

→ **अन्य विभागों से समन्वय संबंधितः**

- पंचायती प्रतिनिधियों, तथा समुदाय के प्रभावशाली लोगों के साथ बैठक करके दिमागी बुखार/नवकी बीमारी पर चर्चा करें और सभी घरों में शौचालय बनवाने एवं गांव को खुले में शौच मुक्त बनाने के लिए उन्हें प्रेरित करना।
- प्रधान और सफाईकर्मी के साथ ग्राम पर्यावरण की स्वच्छता सुनिश्चित करें।
- एईएस पोस्टर लगाने के लिये जगह चिहिन्त करने में ग्राम प्रधान का सहयोग ले।
- स्कूल शिक्षकों और स्कूल प्रबन्धन समिति के साथ मिलकर स्कूली बच्चों का दिमागी बुखार/नवकी बीमारी पर संवेदीकरण करें, और स्कूल से बाहर वाले बच्चों में बुखार के मामलो के लिये नजर रखें।

→ **मॉनिटरिंग व रिपोर्ट संबंधितः**

- ग्राम स्तर की गतिविधियों की योजना विभाग द्वारा दिये गये प्रारूप में बनायें।
- अपनी योजना एएनएम के साथ सब–सेन्टर पर साझा करे।
- दस्तक के क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग ग्राम स्तर पर करें।
- दस्तक अभियान के दौरान, आशा अपनी रिपोर्ट हर तीसरे दिन या उसके भीतर भरकर एएनएम को जमा करें।

12. इस अभियान में एईएस संबंधित मुख्य संदेश क्या हैं?

उत्तरः एईएस सम्बन्धी मुख्य सन्देश निम्नलिखित हैंः

→ कोई भी बुखार दिमागी बुखार हो सकता हैं, बिना देरी किये बुखार के रोगी को ब्लॉक या जिला के सरकारी अस्पताल ले जाएँ।

→ अपने आस पास सफाई रखें। आस पास फैली गन्दगी दिमागी बुखार का सबसे प्रमुख कारण हैं इसलिए पीने का पानी इंडिया मार्क–2 हैडंपम्प से ही लें।

→ नियमित शौचालय का प्रयोग करें।

→ शौच के बाद और भोजन से पहले साबुन से हाथ अवश्य धोएं।

→ सूअर बाड़ों और जानवरों के रखने के स्थान को साफ रखें।

→ चूहे, छछूंदर और मच्छरों के सम्पर्क से बचें।

12. दस्तक अभियान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की निम्न भूमिकायें है–

→ संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार से सम्बंधित रोकथाम एवं नियंत्रण गतिविधियों हेतु राज्य, जनपद, ब्लाक तथा पंचायत/ग्राम स्तरों पर विभिन्न विभागों के बीच समन्वय हेतु नोडल विभाग का कार्य करना।

→ संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार केसेज की निगरानी (सर्विलेंस) करना।

→ रोगियों के उपचार की व्यवस्था करना।

→ रोगियों के निशुल्क परिवहन हेतु रोगी वाहन सेवा की व्यवस्था।

→ वाहक नियंत्रण गतिविधियॉ – ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में वाहक के घनत्व का आकलन, स्रोतों में कमी, लार्वारोधी गतिविधियॉ तथा आवश्यकतानुसार फॉगिंग - इस हेतु ग्राम्य विकास तथा नगर विकास विभाग से समन्वय स्थापित करते हुए फोगिंग, लार्वीसाइडल स्प्रे तथा साफ–सफाई गतिविधियों की समेकित कार्ययोजना इस प्रकार बनायी जाए कि एक क्षेत्र में ये गतिविधियाँ एक साथ एक ही तिथि में सम्पादित की जा सकें।

→ प्रचार–प्रसार एवं व्यवहार परिवर्तन गतिविधियाँ ।

→ मॉनिटरिंग, पर्यवेक्षण, रिपोर्टिंग, अभिलेखीकरण तथा विश्लेषण।

→ न्यूरो–रिहैबिलिटेशन।

→ ग्राम स्वास्थ्य तथा पोषण दिवसों पर संचारी रोगों के नियंत्रण हेतु व्यापक प्रचार प्रसार तथा जन जागरूकता।

13. दस्तक अभियान में नगर विकास विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में नगर विकास विभाग की निम्न भूमिकायें हैं–

→ **नगरीय निकायों के चुने हुए जनप्रतिनिधियों का संचारी रोगों की रोकथाम तथा साफ़ सफाई के संबंध में स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से संवेदीकरण** –प्रशिक्षण समय सारिणी के अनुसार नगरीय निकायों के अधिशासी अधिकारी बैठकों का आयोजन सुनिश्चित कर अपने जनपद में मुख्य चिकित्सा अधिकारी को प्रशिक्षक भेजने हेतु सूचित करेंगे।

→ **मच्छरजनक स्थितियाँ पैदा करने वाले व्यक्तियों/संस्थानों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही विषयक उपविधि लागू करना** – नगरीय क्षेत्रों में घरों तथा घरों के आस पास के स्थानों पर पानी जमा हो जाने पर उसकी सतह पर मच्छर अंडे दे जाते हैं जो वयस्क मच्छरों में परिवर्तित हो मलेरिया, डेंगू जापानीज इन्सेफेलाइटिस, फाइलेरिया इत्यादि अनेक बीमारियों का प्रसार करते हैं। इस क्रम में सचिव नगर विकास के पत्रांक संख्या 6433/9–1–96 दिनाँक 7 नवम्बर, 1996 का सन्दर्भ ग्रहण करें (प्रति संलग्न) जिसके द्वारा उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम 1959 तथा उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम 1916 की सम्बंधित धाराओं का उल्लेख करते हुए नगरीय निकायों से मच्छरजनक स्थितियाँ पैदा करने वाले व्यक्तियों / संस्थानों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही विषयक उपविधि लागू कर शासन को लागू की गयी उपविधि की प्रति उपलब्ध कराने की अपेक्षा की गयी थी। परन्तु प्रदेश के अधिकांश नगरीय क्षेत्रीं में यह महत्वपूर्ण कार्य अभी तक लंबित है। इन उपविधियों को पृवृत्त कर लागू करने से मच्छर जनित विभिन्न रोगों के प्रसार में काफी कमी आ सकती है। अतः समस्त नगरीय निकायों को मच्छरजनक स्थितियाँ पैदा करने

वाले व्यक्तियों / संस्थानों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही विषयक उपविधि लागू कर शासन को लागू की गयी उपविधि की प्रति उपलब्ध कराने हेतु पुनः निर्देशित किया जाए।

→ **शहरी क्षेत्रों में फॉगिंग करवाना -** इस हेतु स्वास्थ्य विभाग से समन्वय स्थापित करते हुए फॉगिंग, लार्वीसाइडल स्प्रे तथा साफ–सफाई गतिविधियों की समेकित कार्ययोजना इस प्रकार बनायी जाए कि एक नगरीय क्षेत्र में ये गतिविधियाँ एक साथ एक ही तिथि में सम्पादित की जा सकें।

→ नगरीय क्षेत्रों में वातावरणीय तथा व्यक्तिगत स्वच्छता के उपायों, खुले में शौच न करने, शुद्ध पेयजल के प्रयोग तथा मच्छरों की रोकथाम हेतु जागरूकता अभियान संचालित करना।

→ खुली नालियों को ढकने की व्यवस्था, नालियों/कचरों की सफाई करवाना।

→ उथले हैण्डपम्पों का प्रयोग रोकने के लिए उन्हें लाल रंग से चिन्हित किया जाना।

→ हैण्डपम्पों के पाइप को चारों ओर से कंकरीट से बने प्लेटफार्म द्वारा बन्द करना।

→ हैण्डपम्पों के पास अपशिष्ट जल के निकलने हेतु सोक–पिट का निर्माण।

→ शुद्ध पेयजल की उपलब्धता हेतु हैण्डपम्प के रिबोरिंग एवं पेयजल की गुणवत्ता के अनुश्रवण के लिये बैक्टीरियोलॉजिकल/वायरोलॉजिकल जाँच।

→ आबादी में इण्डिया मार्का–2 हैण्ड पम्पों, मिनी पब्लिक वाटर सप्लाई (एम0पी0डब्ल्यू0एस0), टैंक टाईप स्टैन्ड पोस्ट (टी0टी0एस0पी0) की मानकों के अनुसार स्थापना एवं अनुरक्षण।

→ जल भराव तथा वनस्पतियों की वृद्धि को रोकने के लिए सड़कों तथा पेवमेन्ट का निर्माण करना।

→ सड़कों के किनारे उगी वनस्पतियॉ नियमित रूप से हटाया जाना।

→ शहरी क्षेत्रों एवं श्हरी मलिन बस्तियों के संवेदनशील आबादी समूहों में अपनी गतिविधियों को केन्द्रित करना।

→ संवेदनशील क्षेत्रों को प्राथमिकता के आधार पर खुले में शौच से मुक्त (ODF) करना।

→ संवेदनशील क्षेत्रों तथा शहरी मलिन बस्तियों में विभागीय गतिविधियों की प्रगति आख्या भौतिक प्रगति के अभिलेखीकरण के साथ तैयार करना।

14. दस्तक अभियान में पंचायती राज विभाग/ग्राम्य विकास विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में पंचायती राज विभाग/ग्राम्य विकास विभाग की निम्न भूमिकायें हैं:

→ **जनसंपर्क तथा जनजागरण :**

- ग्राम–प्रधान अपने ग्राम में अभियान के नोडल होंगे तथा अभियान के प्रथम दिन प्रभात फेरी का आयोजन कर संचारी रोग नियंत्रण माह का उद्घाटन करेंगे।
- ग्राम स्तर पर साफ–सफाई, हाथ धोना, शौचालय के प्रयोग तथा घर से जल निकासी हेतु जन–जागरण के लिये प्रचार–प्रसार।
- वी0एच0एस0एन0सी0 के माध्यम से संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार के रोकथाम हेतु ''क्या करें क्या न करें'' का सघन प्रचार–प्रसार।

→ **शुद्ध पेयजल की व्यवस्था**

- उथले हैण्ड पम्पस को चिन्हित कर जनता को उनका प्रयोग न करने के लिए जागरूक करना, इनके स्थान पर इंडिया मार्क–2 हैण्ड पम्पस की व्यवस्था।
- खराब इण्डिया मार्क–2 हैण्डपम्पों की मरम्मत एवं निरन्तर क्रियाशील रखना व उसके चारों ओर पक्का चबूतरा बनवाना।
- सामुदायिक वाटर फिल्टर्स, व्यक्तिगत वाटर फिल्टर्स तथा वाटर पम्पयुक्त टैंक टाइप स्टेण्ड पोस्ट की स्थापना (माइक्रोफाइनेन्स योजनाओं के द्वारा)।
- पेयजल स्त्रोतों/संसाधनों से शौचालयों की दूरी के उपाय, शौचालयों/सीवर से पेयजल प्रदूषित न होने देने के लिए आवश्यक उपाय।

→ **वेक्टर कंट्रोल**

- जलाशयों एवं नालियों की नियमित सफाई ।
- ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा फण्ड से फॉगिंग की व्यवस्था ।
- अपशिष्ट/रूके हुए पानी तथा मच्छरों के प्रजनन की समस्याओं को रोकने के लिए गड्ढों का भराव तथा मकानों के बीच कंकरीट अथवा पक्की ईंटों वाली सड़कों का निर्माण।
- झाड़ियों को कटवाना तथा अन्य कृंतक नियत्रण (Rodent Control) उपाय ।
- जलाशयों एवं तालाबों से हाईसिन्स के पौधों यथा–जलकुम्भी आदि की सफाई।

→ **वातावरणीय स्वच्छता :**

- जल निकासी एवं साफ–सफाई, वाटर सील्ड शौचालयों की स्थापना एवं ग्राम स्तर पर कचरा निस्तारण एवं प्रबन्धन व्यवस्था का विकास।
- संक्रमण तथा जल संदूशण की उत्तरदायी खुली नालियों को ढकना।
- सभी संवेदनशील ग्रामों में स्वच्छ भारत के अभियान के अन्तर्गत ग्रामों में प्रत्येक मकान में शौचालय का निर्माण कर ग्रामों को खुले में शौच से मुक्त बनाना।
- ग्रामों में कूड़दानों की स्थापना में सहयोग।
- ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी के बीच वाले तालाबों को अपशिष्ट तथा प्रदुषण मुक्त रखना – इस हेतु आवश्यक है कि आबादी के बीच स्थित तालाबों को मनरेगा के माध्यम से प्रतिमाह साफ सफाई करवाई जाये तथा उनमें अपशिष्ट प्रवाहित ना किया जाये। अपशिष्ट निस्तारण हेतु आबादी से दूर पृथक व्यवस्था किया जाना उचित होगा।
- ग्राम स्तर पर ऐच्छिक स्वास्थ्य प्रेरक चिन्हित कर ग्रामवासियों के मार्गदर्शन हेतु इनका स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से प्रशिक्षण सुनिश्चित करवाना

15. दस्तक अभियान में पशुपालन विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में पशुपालन विभाग की निम्न भूमिका हैः

→ सूकर पशुपालकों को अन्य व्यवसाय जैसे पोल्ट्री उद्योग को अपनाने हेतु प्रेरित करना ।

→ सूकर पालन स्थल पर वेक्टर नियंत्रण एवं सीरो सर्विलेन्स की व्यवस्था करना।

→ यथासंभव सूकर बाड़े मनुष्य आबादी से दूर स्थापित करवाना।

→ सूकर पालकों को सूकर बाड़े की साफ–सफाई, कीटनाशक छिड़काव एवं जाली से ढकने हेतु प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया जाना।

→ सभी प्रकार के पशु बाड़ों की स्वच्छता, कचरा निस्तारण तथा जाली के प्रयोग हेतु पशु पालकों का गहन संवेदीकरण।

16. दस्तक अभियान में महिला एवं बाल विकास विभाग (आई0सी0डी0एस0) की क्या भूमिका है?
उत्तरः दस्तक अभियान में महिला एवं बाल विकास विभाग (आई0सी0डी0एस0) की निम्न भूमिका है–

→ आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार हेतु प्रशिक्षण प्रदान कर संवेदिकरण किया जाना।

→ आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के द्वारा अपने क्षेत्र के समस्त कुपोषित तथा अति कुपोषित बच्चों की सूची बनाकर उनको उचित पोषाहार उपलब्ध कराना तथा आवश्कता होने पर पोषण पुनर्वास केन्द्रों पर उपचार तथा पोषण पुनर्वास हेतु भेजना ।

→ ए0ई0एस0/जे0ई0 रोग से विकलांग कुपोषित बच्चों को अति कुपोषित बच्चों की भाँति पुष्टाहार/टेक–होम राशन उपलब्ध कराना।

→ संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार हेतु जन जागरण अभियान यथा दस्तक अभियान में स्थानीय एएनएम तथा आशा कार्यकत्रियों को सहयोग करते हुए कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग प्रदान करना।

→ विकलांग बच्चों के प्रशिक्षण एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था के लिए विकलांग कल्याण विभाग से समन्वय कर सहयोग प्राप्त करना।

17. दस्तक अभियान में बेसिक एवं माध्मिक शिक्षा विभाग की क्या भूमिका है?
उत्तरः दस्तक अभियान में बेसिक एवं माध्मिक शिक्षा विभाग की निम्न भूमिका है–

→ प्रतिदिन प्रार्थना सभा में बच्चों को बीमारियों से बचाव, पर्यावरणीय तथा व्यक्तिगत स्वच्छ्ता सम्बन्धी संदेश बतायें, विशेषकर सुरक्षित पीने का पानी, शौचालय का प्रयोग, खुले में शौच के नुकसान पर जोर दें।

→ दिमागी बुखार तथा अन्य संचारी रोगों पर एक विशेष 40–50 मिनट की कक्षा लगायें (हर बुखार खतरनाक हो सकता है, दिमागी बुखार तथा अन्य संचारी रोगों के कारण क्या है, बुखार होने पर ''क्या करें, क्या ना करें'', यह बतायें)।

→ बच्चों के साथ सामुदायिक गतिविधियां आयोजित करें जैसे प्रभात फेरी, रैली, नारेबाजी, हैण्डपम्प स्थल बैठक – क्लोरिनेशन डेमो, पेयजल को उबालना, साबुन से हाथ धोना, शौचालय का प्रयोग इत्यादि।

→ हर दिन उपस्थिति रजिस्टर जांचें और हर उस बच्चे के लिये नजर रखें जो लगातार पिछले दो दिनों से स्कूल नहीं आ रहा/रही हो। ऐसा कोई भी केस हो तो बच्चे के बारे में स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्यों से पूछताछ करें।

→ स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्यों का उनके मासिक बैठक में दिमागी बुखार पर संवेदीकरण करें।

→ बीमारियों से बचाव सम्बन्धित पोस्टर को स्कूल में प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित करना।

→ स्कूल स्वच्छता किट का प्रयोग कर बच्चों को खेल खिलायें या सापं–सीढ़ी खेल खिलायें (जिसमें बच्चों के लिये साफ–सफाई, स्वच्छता और दिमागी बुखार पर सम्बन्धित जानकारी है)।

- शिक्षा विभाग द्वारा उपलब्ध कराये गए गतिविधि कलेंडर के अनुसार गतिविधियों का संचालन।

18. दस्तक अभियान में चिकित्सा शिक्षा विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में चिकित्सा शिक्षा विभाग की निम्न भूमिका है–

→ बी0आर0डी0 मेडिकल कालेज, गोरखपुर तथा किंग जार्ज चिकित्सा महाविद्यालय, लखनऊ द्वारा पीडियाट्रिक आई0सी0यू0 के सफल संचालन के लिये जनपदों के चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टॉफ एवं स्टॉफ नर्सेज को तथा ए0ई0एस0/जे0ई0 रोग की प्रयोगशाला जाँच हेतु प्रयोगशाला प्राविद्यिक को प्रशिक्षित किया जाना।

→ बी0आर0डी0 मेडिकल कालेज, गोरखपुर में ए0ई0एस0/जे0ई0 रोगियों के उपचार हेतु मानव संसाधन एवं उपकरणों की उपलब्धता व प्रयोगशाला में ए0ई0एस0 रोगियों के विभिन्न कारकों की जांच हेतु सुदृढ़ीकरण किया जाना।

→ राज्य स्तरीय रैपिड रिस्पांस टीम के सदस्य के रूप में आउट ब्रेक रिस्पांस तथा नीति निर्धारण में सहायता।

19. दस्तक अभियान में द्विव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग / समाज कल्याण विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में द्विव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग / समाज कल्याण विभाग की क्या निम्न भूमिका है–

→ ए0ई0एस0/जे0ई0 रोग के उपरान्त विकलांग बच्चों का सर्वे जिला द्विव्यांग कल्याण अधिकारी एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी के अधीन किया जाना।

→ जनपद स्तर पर स्थापित डिस्ट्रिक्ट डिस्एबिलिटी रिहैबिलिटेशन सेन्टर का सुदृढ़ीकरण किया जाना जिससे इन विकलांग बच्चों को इस योग्य बनाया जा सके कि वे अन्य शिक्षा संस्थानों में सामान्य बच्चों के साथ ही शिक्षा ग्रहण कर सकें।

→ विकलांग बच्चों हेतु आवश्यक सहायक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

20. दस्तक अभियान में कृषि विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में कृषि विभाग की निम्न भूमिका है–

→ जमे हुए पानी में मच्छरों के प्रजनन को रोकने तथा सिंचाई के वैकल्पिक उपायों पर अपनी तकनीकी सलाह देना।

→ विभागीय पौधशाला से नवीन फसलें तथा मच्छर रोधी पौधे तथा बीज उपलब्ध कराना ।

→ खेतों में कृंतक नियंत्रण के प्रभावी एवं सुरक्षित उपाय बताना।

→ कृषि–मित्रों इत्यादि लिंक कार्यकर्ताओ की मदद से उपरोक्त गतिविधियों के संचालन के निरीक्षण में मदद उपलब्ध कराना।

→ खेतों में मच्छरों के प्रजनन को रोकने/कम करने हेतु नई तकनीकों के प्रयोग के लिए मदद उपलब्ध कराना।

21. दस्तक अभियान में सिंचाई विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में सिंचाई विभाग की निम्न भूमिका है–

→ नहरों तथा तालाबों के किनारे उगी वनस्पतियों को प्रत्येक पखवाड़े हटाना।

→ ग्रामीण आबादी क्षेत्रों के निकट नहरों में जल–क्षरण की मरम्मत करना ताकि मच्छर के प्रजनन के स्थान

कम से कम रहें।

22. दस्तक अभियान में सूचना विभाग की क्या भूमिका है?

उत्तरः दस्तक अभियान में सूचना विभाग की निम्न भूमिका है–

→ सभी स्तरों पर विभिन्न विभागों से नियमित संपर्क एवं समन्वय स्थापित कर विभागों द्वारा की जा रही कार्यवाही तथा गतिविधियों का विभिन्न सूचना माध्यमों से व्यापक प्रचार प्रसार।

23. दस्तक अभियान में मीडिया की भूमिका क्या हो सकती है?

उत्तरः दस्तक अभियान में मीडिया की निम्न भूमिका है–

→ स्थानीय अखबार और केबल टी0वी द्वारा दिमागी बुखार/नवकी बीमारी के बारे में अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें।

→ लोगों को व्यवहार परिवर्तन के लिये प्रेरक संदेश दें– इस बात पर जोर दें कि कोई भी बुखार जानलेवा हो सकती है।

→ एईएस की रोकथाम एवं नियन्त्रण के लिये किये गये साकारात्मक प्रयासों को अपने खबरों में अधिक प्राथमिकता दे।

→ भ्रांतियो को दूर करने के साकारात्मक प्रयास करें – विशेषकर अप्रशिक्षित झोलाछाप डॉक्टर/वैद्य के पास जाने की लोगों की प्रवृत्ति में बदलाव लायें।

→ समय समय पर विशेषकर बरसात के मौसम से कुछ समय पहले से नियमित संदेश दे– कैसे सावधान रहे और बच्चों को एईएस के संक्रमण से कैसे बचायें।

दस्तक अभियान में प्रयोग किये जाने वाले कुछ नारें

→ चूहा मच्छर और छछुन्दर, आने ना दो घर के अन्दर।
→ उत्तर पदेश ने ठाना है, मस्तिष्क ज्वर भगाना है।
→ साफ–सफाई अपनाना है, नवकी बीमारी भगाना है।
→ अगर तेज बुखार आये, नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र तुरन्त ले जायें।
→ घर–घर मच्छरदानी अपनाये तो नवकी बीमारी आने न पायें।
→ सूअर, मच्छर और गन्दा पानी, दिमागी बुखार की रचे कहानी।
→ साफ पानी, साफ हाथ, नवकी बीमारी को देंगे मात।
→ सबको होगी जब इसकी जानकारी, नहीं होगी किसी को नवकी बीमारी।
→ सूअर बाड़ा हो घर से दूर, तो दिमागी बुखार हो गांव से दूर।
→ दरवाजा खटखटाओ, दिमागी बुखार को दूर भगाओ।
→ जैसे ही हो कोई बुखार, सरकारी अस्पताल में करो उपचार।
→ शौच के लिये शौचालय ही सही, नवकी बीमारी को दूर रखने का उपाय यही।
→ बुखार में देरी, पड़ेगी भारी।
→ दिमागी बुखार पर वार, सही वक्त पर सही उपचार।
→ दिमागी बुखार के खतरे को पहचानों, सारे लक्षण और उपाय तुम जानो।

दस्तक शपथ

कोई भी बुखार दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) हो सकता है।

दिमागी बुखार जानलेवा हो सकता है और रोग के उपरान्त शारीरिक और मानसिक विकलांगता भी ला सकता है।

हम शपथ लेते हैं कि दिमागी बुखार (नवकी बीमारी) से इस लड़ाई में हर सम्भव प्रयास करेंगे।

हम शौच के लिय शौचालय का प्रयोग करेंगे और सभी को यही करने के लिये प्रेरित करेंगे। हम अपने व्यक्तिगत साफ सफाई का ध्यान रखेंगे, अपने घर के आस पास साफ–सफाई रखेंगे, अपने गांव के वातावरण को स्वच्छ रखेंगे तथा समुदाय को साफ–सफाई एवं स्वच्छता अपनानें के लिये प्रेरित करेंगे।

यदि कोई बच्चा हमारे गांव में बुखार से पीड़ित होगा, उसके परिवार को तुरन्त इलाज के लिये सरकारी अस्पताल जाने हेतु प्रेरित करेंगे।

दस्तक अभियान के लिये निदेशक,
संचारी एवं वेक्टर जनित रोग, उ0प्र0 सरकार द्वारा अनुमोदित सामग्री एवं यूनिसेफ द्वारा प्रकाशित